International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal l -Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-I SSN: 2348-6848
p-I SSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

सिन्धु सभ्यता के उद्भव से सम्बन्धित वाद–विवाद

आदर्श प्रताप सिंह
नेट, जे0आर0एफ0
एम0ए0–प्राचीन इतिहास
डा0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद

सार– सिन्धु सभ्यता का उद्भव एक रहस्य बना हुआ है। प्रायः किसी भी सभ्यता के विकास के चरण होते हैं लेकिन सिन्धु सभ्यता प्रारम्भ से नगरीय सभ्यता थी। इस पर विद्वानों में मतभेद है कुछ का मानना है कि सिन्धु सभ्यता सुमेरियन सभ्यता की उत्तरवर्ती है तो कुछ का मानना है कि सिन्धु सभ्यता मौलिक सभ्यता है। प्रस्तुत लेख में इन्हीं मतों का विश्लेषण किया गया है।

परिचय–

पाकिस्तान और पश्चिमी भारत के क्षेत्रों में फैली सभ्यता विकसित एवं परिपक्व सभ्यता दृष्टि गोचर प्रतीत होती है। सिन्धु सभ्यता के विकसित स्वरुप से वो सभी परिचित थे परन्तु इसकी आरम्भिक अवस्था के बारें में जानकारी का अभाव है। सैन्धव सभ्यता के प्रकाश में आने के बाद पुरातत्वविदों को कुछ प्रश्नों के उत्तर ढूढ़ने पड़े जैसे–सैन्धव निवासी कौन थे, क्या वे बाहरी थे। यदि वे बाहर से नहीं आये तो इस सभ्यता के प्रारम्भिक स्वरुप का पता क्यों नहीं चलता है। सैन्धव सभ्यता प्रारम्भ से ही विकसित दिखाई देती है जो कि विकास के अनुक्रम का उल्लंघन है। सिन्धु घाटी के अलावा और भी जितनी सभ्यतायें दिखायी देती है सबके विकास का स्तरीकरण दिखता है। लेकिन जब सैन्धव सभ्यता के प्रारम्भिक स्तरों की छानबीन की जाती है तो समस्या जटिल हो जाती हे। सैन्धव सभ्यता के उद्भव के दो मत प्रचलित है।

1. स्थानीय उपत्ति का मत।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal l -Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-I SSN: 2348-6848
p-I SSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

2. विदेशी उपत्ति का मत

1. स्थानीय उपत्ति का मत–

सैन्धव सभ्यता में उपस्थित विशिष्ट मौलिक तत्व के आधार पर स्टुअर्ट पिग्गट, फेयर सर्विस तथा रफीक मुगल ने इसे स्थानीय सभ्यता का है। उन्होंने कहा कि सैन्धव सभ्यता किसी विदेशी सभ्यता से अनुप्राणित न होकर स्थानीय संस्कृतियों से विकसित हुई थी। मेसोपोटामिया सभ्यता की जो पुरानिधियां सैन्धव सभ्यता के पुरावशेषों से प्राप्त हुई है, वे मात्र पारस्पारिक सांस्कृतिक सम्पर्क एवं व्यापारिक सम्बन्ध के द्योतक है। अफगानिस्तान में स्थित मुंडीगाक, देह मोरासी, हरियाणा में राखीगढ़ी तपा बनावली आदि से ताम्र पाषाणिक ग्रामीण संस्कृतियों के साक्ष्य मिले हैं। इन ग्राम्य संस्कृतियों के लोग कृषि तथा पशुपालन से परिचित थे। सम्भवतः बलूचिस्तान के लोग–मिट्टी की पशु एवं नारी मृणमूर्तियां बनाने में अभ्यस्त थे। सम्भवतः मातृदेवी एवं लिंग की पूजा करते थे। मृतकों का दाह संस्कार एवं समाधीकरण करते थे। पत्थर एवं कच्ची ईंटों के मकान बनाते थे। कोटदीजी एवं कालीबंगा के प्राक सैंधव बस्तियां कच्ची ईंटों की रक्षा दीवारों से घिरी हुई थी। रक्षा दीवारों को प्रायः नगरीकरण की ओर अग्रसर होने का सूचक माना जाता था।

सभ्यता के उद्‌भव पर अमेरिका के पुरातत्वविदों वाल्टर फेयर सर्विस एवं जार्ज एफ टेल्स ने कुछ महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किये। जैसे–पहाड़ी एवं मैदानी क्षेत्रों में व्याप्त ग्राम्य–संस्कृतियों में परस्पर सम्पर्क के साक्ष्य मिलते हैं तथापि ये विभिन्न स्थानीय परम्पराओं की उपज थी। फेयर सर्विस का कथन है कि सैंधव सभ्यता एवं विशुद्ध नगरीय सभ्यता है।

इस क्षेत्र में नगरीय जीवन दो कारणों से उत्पन्न हुआ–

1. इस क्षेत्र की ग्रामीण संस्कृतियां अपने परिवेश से अधिकतम लाभ उठाने की स्थिति में नहीं थी।

2. वे इस स्थिति में थी जहाँ से नगरीयकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ की जा सकती थी। बलूचिस्तान, सिन्ध, पंजाब और राजस्थान के क्षेत्रों की ग्रामीण संस्कृतियों का सम्पर्क पश्चिम एशिया की ग्रामीण संस्कृतियों से रहा होगा। दोनों के बीच विचारों का आदान–प्रदान

हुआ होगा और कालान्तर में ऐसी परिस्थितियां आयी होगी जब इन ग्राम्य–संस्कृतियों ने नगरीय जीवन में प्रवेश करने हेतु आवश्यक उपादान जुटा लिये होगें। और इस प्रकार इन्होंने स्वयं नगर जीवन की शुरुआत किया। अतः उन्हें इस बात की जानकारी थी कि सिन्धु घाटी सभ्यता मेसोपोटामिया की सभ्यता नहीं है अतः यदि इस क्षेत्र में नगरीय जीवन का सूत्रपात होगा तो उनका अपना स्वतंत्र स्वरुप होगा। और मौलिकता उसकी अपनी होगी। निर्माण कार्य में कच्ची ईंटों का प्रयोग में लाया जाने लगा परन्तु उसका आकार मेसोपाटामिया की ईंटों के समस नहीं था।

सैंधव लिपि के अक्षरों के स्वरुप मेसोपोटामिया की लिपि के अक्षरों से भिन्न थे। मृदभाण्डों पर अंकित चित्र सिन्धु घाटी की उपज थे क्योंकि जिन पेड़ों का अंकन हुआ है वे सब सिन्धु घाटी में मौजूद थे तथा जिन पशु पक्षियों का अंकन हुआ था वे सब वहाँ पर मौजूद थे। यद्यपि उपर्युक्त ग्राम्य संस्कृतियों में पकी ईंटों का प्रयोग, लेखनकला और मुहरों के प्रचलन के साक्ष्य नहीं मिलते है तथापि सिन्धु सभ्यता के अनुत्वरित प्रश्न इन्हीं में से खोजे जाने चाहिए।

विदेश उत्पत्ति का मत–

विदेश उत्पत्ति के सिद्धान्त के प्रमुख समर्थक जॉन मार्शल, बी0 गार्डन चाइल्ड, माटीमर ह्वीलर और डी0ए0 गार्डन हैं। इन लोगों का मानना है कि सिन्धु घाटी सभ्यता ने दजला फरात की घाटी से प्ररेणा ली थी। ह्वीलर का मत है कि विचार बहुत प्रबल होते है और आसान परिस्थितियों के होने पर उनका तेजी से प्रसार होता है। समय के आधार पर देखा जाए तो मेसोपोटामिया की सुमेरिया सभ्यता सैंधव सभ्यता के पहले की थी। सैंधव सभ्यता के साथ सुमेरिया सभ्यता की एकजुटता न होने पर भी दोनों सभ्यताओं में उल्लेखनीय समानताएं हैं। दोनों ही सभ्यताओं में नगर जीवन का विकास कांस्य एवं ताम्र उपकरणों के साथ–साथ पाषाण के लघु उपकरणों का उपयोग, चाक निर्मित मृद्भाण्ड, इमारतों के निर्माण में कच्ची एवं पक्की ईंटों का प्रयोग समान है।

यहाँ पर ध्यान देने वाली बात है कि मेसोपोटामिया और सैंधव सभ्यता में आधारभूत अन्तर है। सैंधव सभ्यता के नगर योजनानुसार बसाये गये प्रतीत होते हैं। जैसे सीधी सड़कों का जाल,

स्वच्छता और सफाई का समुचित प्रबन्ध था। सुमेरीय नगर गांवों से विकसित हुई थी, अतः वहाँ सड़के सुव्यवस्थित नहीं थी। धातु के उपकरणों, मूर्तियों और मुहरों के आधार प्रकार में उल्लेखनीय विभिन्नताएं हैं। दोनों ही लिपियों में अन्तर है अहमद हसन दानी के अनुसार हड़प्पा की लिपि में लगभग 537 चिन्ह हैं जबकि सुमेरीय कीलाक्षर लिपि में करीब 900 शब्द है ऐसी स्थिति में सैंधव सभ्यता को मेसोपोटामिया सभ्यता के उपनिवेशन का परिणाम नहीं माना जा सकता है। अतः सैंधव सभ्यता सुमेरियन सभ्यता से स्वतंत्र थी

निष्कर्ष– सिन्धु सभ्यता के उद्भव का प्रश्न विवादित है। कुछ विद्वानों ने उपलब्ध साम्यता के आधार पर सिन्धु सभ्तया को सुमेरिया की उत्तरवर्ती करार दिया तो कुछ ने कहा कि सिन्धु सभ्यता में मौलिकता की अधिक व्यापकता है जिसमें कारण यह माना जा सकता है कि यह एक स्वतंत्र सभ्यता थी। इस प्रकार उद्भव से सम्बन्धित जो प्रश्न अनुत्तरित है उन सबका उत्तर भविष्य में होने वाले पुरातात्विक अनुसंधानों से हो सकेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

Agrawal D.P. - The Archacology of India London 1982. TheCopper-Bronze age in India, Delhi 1972

Dani, A.H. - Indus civilzation : New perspective, Department of Archaeology, Karachi 1981

Dhavalikar, M.K. - Cutural imperialism : Indus civilzation in western India Books and Books.

Gaur, R.C. - Excavations at Atranjikeres

Ghosh, N.C. - Archacological Survey of India, New Delhi 1986

Jansen. M. - Mohanjo-daro : City of wells and drains

e-I SSN: 2348-6848
p-I SSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

Jayasawal, Vidula - Palaeohistory of India, Delhi

Lal., B.B. - Indian Archaeology since independence

Lal, B.B & Gupta S.P. - Frontiers of Indus civilization

Marshall J. - Mohanjodaro and the Indus valley civilization

Thapar Romila - Ancient Indian Social history

Sharma, Ram Sharma - Ancient India

Jha and Shree mail - History of Ancient India